विवाहित जीवन का अलौकिक आनंद

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

गृहस्थाश्रम का महत्व

आश्रम व्यवस्था हमारी देवोपम भारतीय संस्कृति का मूल आधार है । प्राचीन ऋषियों–मनीषियों ने गहन चिंतन–मनन के उपरांत मानवीय जीवन का चार भागों में विभाजन किया था । सौ वर्ष के आदर्श जीवन काल को २५–२५ वर्ष के चार खंडों में, चार आश्रमों में, बांट दिया था । पहला ब्रह्मचर्य फिर गृहस्थ और पचास वर्ष की आयु पर वानप्रस्थ तथा अंतिम संन्यास आश्रम की व्यवस्था की गई थी । इसके अनुसार पहले २५ वर्षों में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए शारीरिक एवं मानसिक रूप से अपने को परिपुष्ट बनाया जाता था । इसके बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करके परिवार, समाज व राष्ट्र की सेवा करने का विधान था । वानप्रस्थ व संन्यास आश्रमों में लोक कल्याण की साधना करते हुए समाज में चतुर्दिक सुख–शांति का वातावरण निर्मित करने के सतत प्रयास में मानव जी–जान से जुटा रहता था ।

इस व्यवस्था पर यदि गंभीरतापूर्वक विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास, तीनों आश्रमों का उद्देश्य यही है कि गृहस्थाश्रम को सुचारु रूप से व्यवस्थित, समुन्नत और सुख शांति से परिपूर्ण बनाया जाए । इसका एक पक्ष यह भी है कि गृहस्थाश्रम के ऊपर ही शेष तीनों आश्रमों के समुचित पालन–पोषण करने का दायित्व भी है । इसी कारण गृहस्थाश्रम को चारों में सबसे महत्वपूर्ण कहा गया है । जहां ब्रह्मचर्य आश्रम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का आधार है वहीं गृहस्थ आश्रम उस आधार पर निर्मित एक सुंदर भवन है ।

गृहस्थ धर्म भी है और योग साधना भी । प्राचीन ग्रंथों व धर्म शास्त्रों में गृहस्थ धर्म को मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य कहा गया है । भगवान मनु ने तो यहां तक कह दिया है कि पुरुष उसकी पत्नी और संतान मिलकर ही 'संपूर्ण मनुष्य' होता है । जब तक यह न हो, वह एक अधूरा, अधकचरा और खंडित मनुष्य ही कहा जाएगा । मनुष्य जीवन में गृहस्थाश्रम की महत्ता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि प्राचीनकाल में अधिकांश ऋषि गृहस्थ ही थे । गूहस्थ धर्म का पालन करते हुए ही उन्होंने तप किए और अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त कीं । राम और कृष्ण भी गृहस्थ थे । भगवान शिव भी अपनी विचित्र 'शंकर की बारात' लेकर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हुए थे और साधना व तपस्या का जीवन जीते रहे थे । वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, जमदग्नि, गौतम, च्यवन, अत्रि, लोमश आदि अनेकानेक प्रसिद्ध ऋषियों ने गृहस्थाश्रम की मर्यादाओं का पूर्णरूपेण पालन किया था । परम पूज्य गुरुदेव ने गृहस्थ में रहकर ही जो विलक्षण कार्य किए, वे तो सर्वविदित हैं । गृहस्थ धर्म की साधना से आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है तथा मुक्ति स्वर्ग व सिद्धि प्राप्ति का सहज योग बनता है । कबीर ने तो गृहस्थ को सहज योग की संज्ञा प्रदान की है क्योंकि यह सबसे सरल योग है ।

योग का अर्थ है जोड़ना । योग के द्वारा मनुष्य किसी दूसरी शक्ति के साथ अपने को जोड़कर शक्ति का संचय करता है और अपनी अपूर्णता को दूर करने में सफल होता है । ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग, हठयोग, तंत्रयोग आदि ८४ प्रकार के योग हैं । इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबमें गृहस्थ योग सबसे सरल व प्रभावी है । दो आत्माओं के मिलन से उत्पन्न ऊर्जा का समुचित समन्वय करने से जो सिद्धि प्राप्त की जा सकती है, वह अन्य किसी भी योग से संभव नहीं है ।

एकाकी जीवनयापन करने वाला व्यक्ति जब गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है तब उसकी उच्छृंखलता एवं स्वार्थपरता पर स्वतः ही अंकुश लग जाता है और उसकी आत्मीयता विकसित होने लगती है । यह आत्मीयता पहले पत्नी के साथ फिर बच्चे के साथ और फिर धीरे धीर अन्य संबंधियों, पड़ोसियों, समाज, राष्ट्र आदि में बढ़ते हुए विश्व बंधुत्व तक जा पहुंचती है । यह साधना आगे चलकर संसार के सभी जीव जंतुओं के साथ उसकी आत्मीयता को जोड़ देती है और वह सर्वत्र परमात्मा की दिव्य सत्ता के आलोक के दर्शन करता है । गृहस्थ योग की साधना द्वारा मनुष्य अपने स्वार्थ का परिशोधन करके उसे परमार्थ में बदल देता है, तुच्छता एवं संकीर्णता के स्थान पर महानता और उदारता का मार्ग अपनाता है । यह सब अत्यंत स्वाभाविक और सुखद है ।

गृहस्थ एक ऐसा तपोवन है जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है । इसमें परमार्थ, सेवा, सहायता, प्रेम, त्याग, उदारता आदि को अपनाना होता है । अपना दृष्टिकोण इस प्रकार का रखना होता है कि बदले में किसी बात की इच्छा या आकांक्षा न रहे । निःस्वार्थ भाव से सभी के साथ आत्मीयता और उदारता का व्यवहार करते हुए जो भी बन सके सो करने को सदैव तत्पर रहा जाए । सच्चा सद्गृहस्थ तो घर परिवार में रहते हुए भी संन्यासी के समान होता है । दूसरों की सुख–सुविधा व आवश्यकताओं की पूर्ति में उल्लास व उत्साहपूर्वक अपनी क्षमता व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभा का नियोजन करने के पश्चात ही वह अपने स्वयं के बारे में विचार करता है ।

जब तक गृहस्थाश्रम के महत्व को भलीभांति नहीं समझा जाएगा, मनुष्य इसके स्वर्गीय आनंद का रसास्वादन कर ही नहीं सकेगा । आजकल इसी अज्ञानता का दुष्परिणाम चारों ओर दृष्टिगोचर हो रहा है । लोग गृहस्थाश्रम को मात्र मौज मजे का साधन समझकर उसके लिए लालायित रहते हैं तथा उसकी गरिमा एवं दायित्वों के प्रति उदासीन रहने के फलस्वरूप नाना विधि शोक संतापों को झेलते हुए स्वयं भी दुखी रहते हैं और दूसरों को भी कष्ट देते हैं । दांपत्य जीवन की असफलता का यही कारण है । सुखी दांपत्य के ऊपर ही व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक प्रगति निर्भर करती है । चारों ओर कलह क्लेष का जो वातावरण है उसका बीजांकुर अनियंत्रित गृहस्थ में ही होता है । वहीं से स्वार्थ, माया, मोह, लोभ आदि की भावनाएं पनपती हैं और कालांतर में एक ऐसे समाज का निर्माण करती हैं जो राक्षसी वृत्तियों से ओत प्रोत होता है ।

सुसंस्कारवान गृहस्थ अपने घर के बच्चों में जन्म से ही सद्गुणों का प्रत्यारोपण करता है और उन्हें शीलवान, सच्चरित्र, पुरुषार्थी नागरिक बना देता है । उसके संपर्क में आने वाले अन्य परिवारीजन व पड़ोसी भी उसी प्रकार सत्कर्मों में प्रवृत्त होते हैं और एक स्वस्थ व शक्तिशाली समाज एवं राष्ट्र की स्थापना में अपना ठोस योगदान देते हैं ।

गृहस्थाश्रम में प्रवेश से पूर्व सभी युवक युवतियों को इसकी गरिमा एवं उत्तरदायित्वों को भलीभांति समझ लेना चाहिए ।

४ तीनों आश्रम एक ओर, गृहस्थ आश्रम दूसरी ओर ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाह का उद्देश्य

विवाह का उद्देश्य और आदर्श क्या है ? सभ्यता के प्रारंभ से ही यह प्रथा आखिर क्यों चली आ रही है ? यदि केवल काम कौतुक ही विवाह का प्रयोजन है तो यह बहुत ही मंहगा और झंझट भरा सौदा है । उसमें दोनों पक्षों के हाथ केवल बरबादी ही लगती है । पुरुष कोल्हू के बैल की तरह पिसता है और स्त्री प्रजनन के कुचक्र में फंसकर अपना स्वास्थ्य व प्रतिभा ही नहीं, अपना जीवन तक गंवा देती है । नहीं, विवाह का ऐसा उद्देश्य कभी नहीं हो सकता । यदि यही रहा होता तो समाज व्यवस्था पूरी तरह से छिन्न–भिन्न हो जाती और मनुष्य पशु से भी निकृष्ट स्तर पर पहुंच जाता ।

दो भिन्न स्थानों, भिन्न वातावरण में पैदा हुए और पले बढ़े नर नारी भिन्न प्रकृति और भिन्न आकृति के होते हुए भी समग्र एकता के सूत्र में बंधकर विवाह का प्रयोजन पूरा करते हैं । विवाह का वास्तविक अर्थ है दो आत्माओं की पृथकता को समाप्त करके एक दूसरे के प्रति समर्पण । इस समर्पण और समन्वय से ही एक सम्मिलित सत्ता का विकास होता है जो 'दो शरीर एक जान' के रूप में दिखाई देता है ।

विवाह एक आध्यात्मिक साधना है । यह एक ऐसी प्रेम वल्लरी है जिसका अभिसिंचन त्याग और उत्सर्ग की उच्च भावना से किया जाता है । यह सज्जनों और शूरवीरों का काम है । सुखी गृहस्थ जीवन के लिए आवश्यक है कि वर और कन्या दोनों का ही जीवन उच्च स्तर का हो । दोनों गुणवान हों । वर वेद ज्ञान का ज्ञाता, सुशिक्षित, संस्कारित एवं सहिष्णु हो । कन्या में शुद्धता पवित्रा और प्रतिभा हो । शरीर की आंतरिक शुद्धि से मन, बुद्धि और चित्त शुद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होते हैं । मन यदि शुद्ध है तो बुद्धि और चित्तवृत्तियां भी शुद्ध होंगी । शरीर की आंतरिक व बाह्य शुद्धता से आचरण मे पवित्रता आती है, सद्गुणों का विकास होता है और ज्ञान व प्रतिभा का प्रकाश फैलता है । ज्ञान और चरित्र मानव जीवन की कसौटी हैं । जो इस पर खरे उतरें, ऐसे तेजस्वी पुरुष व विदुषी महिला विवाह बंधन में बंधकर यज्ञीय जीवन जीते हुए आत्मोन्नति कर सकते हैं । क्षमता, विद्वत्ता और सुयोग्यता के मापदंड को ही विवाह का आधार बनाकर परिणय सूत्र में बंधने से पति पत्नी दोनों का जीवन सुखमय होता है ।

विवाह केवल दो शरीरों का मिलन ही नहीं वरन दो आत्माओं का गठबंधन भी है । पति पत्नी में भी मनुष्योचित दुर्बलताएं एवं त्रुटियां रहती हैं, पर यदि विवाह के उद्देश्य को समझकर परस्पर आत्मीयता, समर्पण, एकता और ममता का व्यवहार रहे तो दांपत्य जीवन की नाव आनंदपूर्वक आगे बढ़ती रहती है । 'अपने लिए कुछ भी नहीं, साथी के लिए सब कुछ' की बात सोचने वाला व्यक्ति स्वयमेव ही अपनी दुर्बलताओं और त्रुटियों को सहज ही सुधार लेता है । जिससे साथी को किसी प्रकार की असुविधा न हो ।

आज लोगों ने विवाह के उच्च उद्देश्य एवं आदर्श को ही भुला दिया है । बाहरी चमक–दमक और रुपये–पैसे को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है तथा आंतरिक सौंदर्य व प्रतिभा की उपेक्षा होती है । लड़के रूपवती और उत्तेजित लड़कियां खोजते हैं ताकि वासना को अधिक आकर्षण प्राप्त हो सके । लड़कियां इसके साथ ही मोटी मुर्गी की तलाश करती हैं ताकि वासना के साथ विलासिता और आरामतलबी का सुख भी मिलता रहे । लोग यह भूल जाते हैं कि विवाह की सफलता का आधार साथी की मनोभूमि, संस्कृति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं आदर्शवादिता ही है । परिणामस्वरूप पति पत्नी में अधिकतर असंतोष व अविश्वास ही बना रहता है । सच्ची सहानुभूति, ममता और एकता के अभाव में दोनों पास रहते हुए भी अपरिचितों के समान गृहस्थ की लाश ही ढोते रहते हैं । दांपत्य की सरसता, सहजता व सहिष्णुता के आंतरिक आनंद व उल्लास से वे वंचित रह जाते हैं । आधुनिकता के रंग में रंगी स्त्री घर की शांति को अशांति में परिवर्तित कर देती है ।

सफल दांपत्य जीवन के लिए पति और पत्नी दोनों ही उत्तरदायी होते हैं, पर चूंकि पत्नी दूसरे परिवार से पति के परिवार में आती है अतः पति का दायित्व अधिक होता है । केवल विवाह हो जाना भर ही दांपत्य जीवन का सौभाग्य नहीं है । अपितु पति पत्नी दोनों में प्रेममूलक अनुकूलता होना और तदनुसार व्यवहार करना ही स्थायी सुख का आधार होता है । जहां दोनों ओर से प्रेम और सुख दुख में सहभागिता है वहां सौभाग्य स्थिर रूप से निवास करता है ।

कन्या का भावी जीवन सुखमय हो, इसके लिए वर को सौंपने से पूर्व उसके गुणों का समुचित मूल्यांकन करना भी आवश्यक होता है । सुयोग्य, विद्वान और दुर्व्यसनों से मुक्त व्यक्ति ही सफल एवं सुखी पारिवारिक जीवन का बोझ ढो सकता है । वह अत्यंत ज्ञानवान और गुणी तो होना ही चाहिए, साथ ही हृष्ट–पुष्ट हो और दुर्गुणों, दुष्प्रवृत्तियों और दुर्व्यसनों से मुक्त हो । सुखी दांपत्य जीवन के लिए यह आवश्यक है कि पति सभी दृष्टि से संपन्न हो व धन–धान्य से समृद्ध हो । उसमें तेजस्विता तथा मानसिक प्रसन्नता हो । ऐसा पति ही अपनी पत्नी को पूर्ण रूप से संतुष्ट और प्रसन्न रख सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार संस्था की उपयोगिता

परिवार सदैव एक से अधिक व्यक्तियों के मिलने से बनता है । पति और पत्नी तो होते ही हैं, साथ में पुत्र, पुत्री, भाई, बहन, मां, बाप, चाचा, चाची, दादा, दादी, सास, ससुर आदि अनेकानेक संबंधी भी रहते हैं । इन सबके बीच संबंधों की जो मधुरता व पवित्रता होती है उससे परिवार में विशेष प्रकार की प्रसन्नता, आह्लाद, उल्लास और चहल पहल का वातावरण बनता है । यदि पति पत्नी के बीच प्रेम और विश्वास की प्रगाढ़ता है तो परिवार में सर्वत्र प्रेम, स्नेह, श्रद्धा व सेवा की भावना बनी रहेगी । बच्चे भी आज्ञाकारी होंगे । सभी एक दूसरे के हित की ही सोचेंगे और हित की ही करेंगे । तब यह स्थिति नहीं आएगी कि 'बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रुपैया' । अपना स्वार्थ गौण रहेगा तथा परिवार में सबकी उन्नति के लिए स्वयं त्याग करने की भावना बलवती होगी । आत्मीयता, उदारता और सहयोग से सभी एक दूसरे की सेवा करते हुए परिवार में हर्षोल्लास की सुगंध फैलाएंगे ।

परिवार में सभी एक दूसरे के प्रति स्नेह व सहयोग का भाव रखते हुए स्वयं कष्ट उठाने को तत्पर रहते हैं । पर स्त्री के त्याग का तो कहना ही क्या, वह तो त्याग की साक्षात मूर्ति है । पत्नी, बहन, बेटी मां हर रूप में उसका त्याग परिवार को अलौकिक आनंद से भर देता है ।

हमारे देश में संयुक्त परिवार प्रणाली एक वरदान है और यह बचपन से ही गृहस्थ के उत्तरदायित्वों से परिचित करा देती है । आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास की दृष्टि से भी उसका बड़ा महत्व है । माता–पिता की सेवा, भाई–बहनों की सहायता, कुटुंबियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की समस्याएं अपनी समझने और उन्हें सुलझाने में संलग्न रहकर व्यक्ति अपनी स्वार्थपरता को घटाता और उदारता को बढ़ाता है । केवल अपनी देह और पत्नी तक की बात सोचने वाला चढ़ती उम्र में कुछ सुविधाएं भले ही पा ले पर शेष जीवन में उसे अपनी इस संकीर्णता का दंड भुगतना ही पड़ता है । हारी, बीमारी, असमर्थता, दुर्घटना, लड़ाई–झगड़ा आदि अवसरों पर संयुक्त परिवार की उपयोगिता पता चलती है जब अन्य सभी अपने–अपने ढंग से सहायता करके बोझ हल्का करते हैं । संयुक्त परिवार प्रणाली में ही यह संभव है कि अयोग्य, असमर्थ, पागल, दुर्गुणी सभी खप जाते हैं । अकेले होते तो उन्हें भीख मांगना व जीवित रहना भी कठिन पड़ता ।

नव वधू परिवार का केंद्रबिंदु होती है और सभी उससे कुछ न कुछ आशाएं व अपेक्षाएं रखते हैं । यह उसकी व्यवहारकुशलता पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार परिवार में सबकी प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास व माधुर्य को बनाए रखती है । परस्पर सौजन्य, स्नेह, सम्मान, सहयोग, शिष्टाचार की भावना बनी रहे तो कभी भी असंतोष या मनोमालिन्य उत्पन्न नहीं होता । परिवार का हर सदस्य अपने कर्तव्यों और अधिकारों का उचित रूप से पालन करे । यह न हो कि कुछ लोग बड़प्पन के नाम पर मौज करते रहें व छोटों को कोल्हू के बैल के समान रात दिन खटना पड़े । इसी से परिवारों का विखंडन होता है ।

जैसे समुद्र व नदियों का आपसी संबंध होता है उसी प्रकार परिवार का भी संचालन होना चाहिए । समुद्र संसार के सारे जल का स्वामी है । नदियों का जल भी बहकर उसी में आ जाता है । पर इस जल पर वह अपना एकाधिकार नहीं समझता । बादलों के माध्यम से संसार के कोने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोने में पहुंचा कर बरसा देता है और समस्त जीव जंतुओं के पालन पोषण का साधन बनता है । वधू से भी यही अपेक्षा होती है कि वह घर की समस्त सुख सुविधाओं की मालकिन बनकर, सब का स्नेह सम्मान प्राप्त करके, समुद्र के समान धीर गंभीर भाव से परिवार के सभी सदस्यों के हित चिंतन को ही अपना परम सौभाग्य समझे ।

ऋग्वेद में वधू से अपेक्षा की गई है कि वह पति गृह में पहुंच कर सास, ससुर, ननद तथा देवर की सम्राज्ञी बन जाए ।

सम्राज्ञी श्वशुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव ।
ततान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधि देवृषु ॥

(ऋग्वेद १०/८५/४६)

पर क्या यह इतना आसान है ? पति गृह में जाकर सब पर एक सम्राज्ञी के समान शासन कर सके, क्या यह कहने भर से हो जाएगा ? इसके लिए उसे कितना त्याग करना पड़ता है । विवाह के बाद वह अपना सब कुछ त्याग कर पति के घर में आती है । माता, पिता, भाई, बहन, परिवार, घर सब पीछे रह जाता है । जहां उसने जन्म लिया, खेलकूद कर, पढ़ लिखकर यौवनावस्था में पैर रखा, वह सारा स्नेहिल परिवेश वह हंसते–हंसते त्याग देती है और एक अनजाने, अपरिचित व्यक्ति के साथ नाता जोड़कर उसके घर पहुंचती है । इस त्याग से क्या वह नुकसान में रहती है ? नहीं, उलटे पति के लिए त्याग और सर्वस्व समर्पण द्वारा वह पति के परिवार की एक अति महत्वपूर्ण सदस्या बन जाती है । अब यही उसका परिवार हो जाता है जहां वह गृहस्वामिनी के उच्च पद पर आसीन होती है । घर की मालकिन बन जाती है और घर का समस्त दायित्व उस पर आ जाता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस त्याग के कारण ही वह इस नए परिवार में अपने सास, ससुर, ननद, देवर सभी की सम्राज्ञी बन जाती है । जिस प्रकार एक सम्राट अपने अधीनस्थ सभी राजाओं की सुख, सुविधा व सुरक्षा की चिंता करता है और सब में सामंजस्य स्थापित करते हुए उन सभी की उन्नति का ध्यान रखता है, उसी प्रकार परिवार की मुखिया बनकर नव वधू को भी सबकी सेवा, सुविधा, भोजन, वस्त्र आदि की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने का गुरुतर भार उठाना होता है । छोटे हों या बड़े सभी का हित चिंतन उसका कर्तव्य बन जाता है । इन कर्तव्यों के निर्वाह के कारण ही वह गृह की स्वामिनी या सम्राज्ञी कहलाती है ।

सम्राज्ञी या स्वामिनी हो जाने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह घर में सब पर अपना प्रभुत्व जमाए । वरन भाव यह है कि वह अपने कर्तव्यों की गुरुता को अनुभव करे, सबसे शिष्ट व्यवहार करे और बड़ों के अनुभव का लाभ उठाते हुए उनके निर्देशन में समस्त गृह कार्यों का संचालन करे । नए परिवेश में आकर वह अपने को सेविका न समझे और उसमें किसी प्रकार की हीन भावना न आने पाए । इसी से उसे सम्राज्ञी का गरिमामय पद दिया गया है । परिवार के सभी लोगों को भी उसे उचित मान सम्मान देकर स्नेह व प्रेम का व्यवहार करना चाहिए ।

पर आजकल अधिकांश व्यक्ति इस प्रेममय स्वस्थ दृष्टिकोण की उपेक्षा करके नववधू को यथोचित स्नेह प्रदान नहीं करते । नौकरानी समझकर सास, ननद व अन्य लोग हर समय उस पर हुकुम चलाते रहते हैं । उसके अच्छे कार्यों में भी उन्हें दोष दिखाई पड़ते हैं । यदि सास ससुर पुत्रवधू को अपनी बेटी के समान समझें और वधू भी उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने माता पिता से बढ़कर माने तभी बात बन सकती है । प्रश्न उठ सकता है कि पहल कौन करे ? सास–ससुर या पुत्र वधू । बड़े होने के नाते पहले सास ससुर को ही उसे अपनी बेटी के समान प्रेम व स्नेह से अनुपूरित करना चाहिए जिससे उसके मां बाप के विछोह से उत्पन्न हुई रिक्तता भर जाए । फिर तो दूने उत्साह से वह साम्राज्य के हित साधन में जुट जाएगी ।

यह दृष्टिकोण अपनाने में ही परिवार संस्था की गरिमा और उसकी सार्थकता है । सभी को इसे भली भांति समझ लेना चाहिए ।

पारिवारिक पंचशीलों का पालन

परिवार के सदस्यों में सुसंस्कारिता और सुहृदयता का बीजांकुर हो, इसके लिए परिवार में कुछ सत्प्रवृत्तियों को विकसित और प्रचलित करने के लिए भी प्रयास किए जाने चाहिए । इस तरह की सत्प्रवृत्तियों में पांच प्रमुख हैं जिन्हें पंचशील कहा गया है ।

ये पारिवारिक पंचशील हैं, (१) सुव्यवस्था (२) नियमितता (३) सहकारिता (४) प्रगतिशीलता (५) शालीनता । इन्हें अपनाने से व्यक्ति, परिवार एवं समाज को उन विकृतियों से बचे रहने का लाभ मिलता है जो समस्त समस्याओं और विपत्तियों के लिए उत्तरदायी हैं । इन्हें अपनाने में सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार खुलता है और उज्ज्वल भविष्य के राजमार्ग पर चल पड़ने का अवसर मिलता है ।

इन पारिवारिक पंचशीलों का किस घर में किस प्रकार अभ्यास किया जाए, इसका कोई सर्वमान्य नियम नहीं बन सकता जो सब पर समान रूप से लागू हो, क्योंकि हर घर परिवार के सदस्यों की स्थिति अलग अलग होती है । अतः निर्धारण एवं क्रियान्वयन अवसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के अनुरूप ही किया जाना चाहिए । यदि इन पांच विभूतियों से घर के प्रत्येक सदस्य को अलंकृत करने का प्रयास चलता रहे तो समय–समय पर वे उपाय भी सामने आते रहेंग कि किसमें क्या कमी है ? और इस कमी को किस प्रकार पूरा किया जा सकता है ?

प्रत्येक गृहस्वामी एवं गृहस्वामिनी को अपने परिवार में धार्मिकता का वातावरण बनाने तथा सभी सदस्यों के स्वभाव में पांच सत्प्रवृत्तियों, पंचशीलों को सम्मिलित करने, उनके स्वभाव का अंग बनाने के लिए सतर्कतापूर्वक संलग्न रहना चाहिए । इसका सबसे कारगर और प्रभावशाली तरीका यही है कि पहले स्वयं इनका पालन किया जाए और अपने आचरण के द्वारा ही दूसरों को भी उन्हें अपनाने की प्रेरणा दी जाए ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विवाह संस्कार का महत्व

किसी भी व्यक्ति के जीवन में उसका विवाह एक महत्वपूर्ण घटना होती है, संभवतः उसके जन्म से भी अधिक महत्व की । जहां यह उसकी व्यक्तिगत आवश्यकता होती है वहीं पारिवारिक एवं सामाजिक उन्नति का मुख्य आधार भी । विवाह न तो चोरी छिपे का कार्य है और न ही कोई तमाशा । इसकी भाव संवेदना और गरिमा का उचित सम्मान करने पर ही विवाह का अलौकिक आनंद प्राप्त किया जा सकता है । विवाह के सामाजिक महत्व को देखते हुए भी यह आवश्यक है कि परिवार और समाज की साक्षी में यह गरिमामय समारोह आयोजित किया जाए, तभी इसे सार्वजनिक स्वीकृति प्राप्त हो सकती है ।

संसार के सभी देशों में विवाह के अवसर पर कुछ न कुछ अनुष्ठान किए जाते हैं चाहे आदिवासी जातियों का विवाह हो या फिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभ्य, सुशिक्षित लोगों का । भिन्न भिन्न लोगों में सभ्यता और परंपरा के अनुरूप ही इस अनुष्ठान का स्तर निश्चित किया गया है जो समय की आवश्यकताओं के अनुरूप बदलता भी रहता है ।

वैदिक काल में ही हमारे ऋषियों–मनीषियों ने विवाह के इस सामाजिक महत्व को स्वीकार कर लिया था और इस पुनीत अवसर के लिए कुछ आवश्यक अनुष्ठान निश्चित कर दिए थे । ये अनुष्ठान संस्कार हमारी सभ्यता व संस्कृति के उच्च स्तर के द्योतक हैं । विवाह से पूर्व वर एवं वधू के बारे में जो भी जांच परख आवश्यक समझी जाए सो की जा सकती है, पर एक बार विवाह बंधन में बंध जाने के बाद तो यह जन्म–जन्म का गठबंधन हो जाता है और दोनों पक्षों को अपने दायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है । इसीलिए समाज के संभ्रांत व्यक्तियों और परिवारीजनों के साथ–साथ दैवी शक्तियों की उपस्थिति में यह धर्मानुष्ठान आयोजित करने का विधान है । वैवाहिक गठबंधन करते समय वर एवं वधू द्वारा सार्वजनिक प्रतिज्ञा करने से वे दोनों ही धार्मिक, नैतिक और भावनात्मक रूप से एकीकरण की आत्मीयता में सराबोर हो जाते हैं ।

विवाह संस्कार के समय आयोजित कर्मकांड जहां आयोजन को पवित्रता प्रदान करते हैं वहीं उपस्थित जनों में आस्था, श्रद्धा व विश्वास जाग्रत करते हैं । वधू के घर पर विवाह मंडप में वर का आगमन, उसका स्वागत, मंगलाचरण, मधुपर्क आदि अत्यंत आकर्षक एवं प्रभावशाली कर्मकांड हैं । इनसे वर वधू के हृदयों में मधुरता का संचार होता है । वधू द्वारा किया गया वर का यह मधुर अतिथि सत्कार दोनों को एक ऐसे आत्मीय बंधन में बांध देता है जो जीवन पर्यंत उनके जीवन को उल्लासमय बनाए रखता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाह दो आत्माओं का पवित्र बंधन है । दो प्राणी अपने अलग अस्तित्व को त्यागकर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं । दोनों ही एक दूसरे की अपूर्णताओं को अपनी विशेषताओं से पूर्ण करते हैं । इसके लिए अपने स्वार्थ, लाभ, मोह, लोभ, अहंकार आदि को त्यागकर एक दूसरे के प्रति प्रेम, उदारता, सहिष्णुता की भावना विकसित करनी होती है । विवाह संस्कार से पूर्व ही दोनों को यह बात भली भांति समझ लेनी चाहिए और इन आदर्शों को अपनाए रहने की हार्दिक सहमति व स्वीकृति देनी चाहिए । इसके बाद ही विवाह संस्कार का कार्य प्रारंभ किया जाना उत्तम होता है ।

वैदिक संस्कार बड़े विस्तृत हैं और प्रत्येक मंत्र की व्याख्या करके उसके भाव को हृदयंगम कराने का प्रयास भी होता है । यह अत्यंत आवश्यक है, पर इसमें जो समय लगता है वह उकता देने वाला होता है । आजकल लोग ब्यूटी पारलर में तो दो–तीन घंटे का समय प्रसन्नतापूर्वक दे देते हैं, पर चाहते हैं कि विवाह संस्कार दो–तीन मिनट में ही पूरा हो जाए । उनकी दृष्टि में इस संस्कार का कोई भावनात्मक महत्व ही नहीं होता । तभी तो आजकल आधुनिकता के रंग में रंगे हुए लोग कोर्ट मैरेज की बात कहते हैं जहां रजिस्टर पर दोनों ने हस्ताक्षर किए और विवाह संपन्न । वे भूल जाते हैं कि यह तो विवाह का औपचारिक पंजीकरण मात्र ही है । अपनी जाति, धर्म और परंपरा के अनुरूप आवश्यक अनुष्ठान, संस्कार तो होने ही चाहिए । ऐसे व्यक्ति मानव स्वभाव की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को आंखों से ओझल कर देते हैं । इन संस्कारों की वर वधू के मन पर ऐसी अमिट छाप पड़ती है जो कठिन समय में भी उनका उचित मार्गदर्शन करती रहती है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाह का स्वरूप

आजकल विवाहों का अत्यंत विकृत स्वरूप देखने में आता रहा है । संस्कार के प्रति उदासीनता तो इस हद तक पहुंच गई है कि उसे बोझ समझकर किसी तरह पूरा किया जाता है । उस समय मित्र, संबंधी और वर वधू भी हास परिहास में डूबे रहते हैं । न तो उन्हें मंत्र सुनाई देते हैं और न ही उनकी भावना को वे हृदयंगम कर पाते हैं । संस्कार पूरा होते ही वे ऐसा अनुभव करते हैं मानो किसी मुसीबत से छुटकारा पा लिया हो ।

विवाह समारोह में भी अनेकानेक कुरीतियां जड़ जमाए बैठी हैं और एक दूसरे की देखा देखी बढ़ती ही जा रही हैं । लंबी चौड़ी बारात, बैंड, रोशनी, आतिशबाजी आदि पर अंधाधुंध व्यय होता है । पंडाल की सजावट, दावत आदि पर अधिक से अधिक खर्च करने की होड़ रहती है चाहे उसके लिए कर्जा ही क्यों न लेना पड़े । इस प्रकार विवाह एक गरिमामय सौम्य एवं पवित्र संस्कार न रहकर एक उद्धत उत्पात का रूप ग्रहण कर लेता है । बारात के समय सड़कों पर ऐसी हुल्लड़बाजी होती है कि सामान्यजन के लिए सड़क पर चलना भी मुश्किल हो जाता है । अश्लील और वासना प्रधान गानों की कान फोड़ आवाज विवाह के पवित्र वातावरण को बुरी तरह दूषित कर देती है । कुछ लोग तो इस अवसर पर खुलेआम शराब पीकर नाचना ही सबसे आवश्यक कर्मकांड समझते हैं ।

वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों को ही गंभीरतापूर्वक विचार करके इन कुरीतियों का बलपूर्वक दमन करना चाहिए । यदि उनके पास धन की अधिकता है तो उसे समाज उत्थान के अन्य रचनात्मक कार्यों में व्यय करके सुयश प्राप्त कर सकते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाह संस्कार पर दहेज दानव की कुदृष्टि

विवाह एक परम पवित्र धार्मिक संस्कार है । उसे सात्विकता एवं धार्मिकता के सौम्य वातावरण में सादगी के साथ मनाया जाना चाहिए । यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि लोगों ने इस धर्मकृत्य को भी एक व्यवसाय बना लिया है । कहीं लड़कियां बेचकर धन कमाया जाता है और कहीं लड़के बेच कर दहेज लेने की प्रथा चल पड़ी है । ऐसी लोभ वृत्ति हमारी संस्कृति पर कुठाराघात ही है ।

आजकल पैसे के पीछे लोग इतने पागल हो रहे हैं कि वे खुले आम बेशरमी से अपने बच्चों का मोलभाव तय करते हैं । लड़के का पिता को उसके जन्म से ही हुंडी भुनाने के सपने देखने लगता है । उसकी शिक्षा दीक्षा और कार्य--व्यापार भी इस प्रकार निश्चित किया जाता है कि विवाह के समय अधिक से अधिक दहेज मिलने की संभावना रहे । कन्या के गुण, स्वभाव, परिवार आदि सब बेकार दिखाई देते हैं यदि वह यथेष्ट दहेज न ला सके । कई योग्य कन्याओं को तो इसी कारण अस्वीकृत कर दिया जाता है । देखा तो यहां तक गया है कि यदि यथेष्ट दहेज का आश्वासन मिल जाए तो पहले अस्वीकृत की गई कन्या को पसंद करके विवाह के लिए स्वीकृति दे दी जाती है । कहीं कहीं तो डाक्टर, इंजीनियर आदि के दहेज के रेट भी तय हैं । लड़के के पिता अधिक धन पाने के लिए अपने लड़के की नीलामी तक करते देखे जाते हैं । यह तो आम बात हो गई है कि लड़के के लालन–पालन और शिक्षा–दीक्षा में जो व्यय हुआ है, वह तो कम से कम दहेज के रूप में मिलना ही चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दहेज के साथ निष्ठुरता भी जुड़ी रहती है । लालच में अंधा व्यक्ति यह नहीं सोचता कि उसकी तृष्णा की पूर्ति में दूसरे पक्ष को कितना कष्ट उठाना पड़ेगा । कन्या का पिता विवशता में अपनी सारी आर्थिक स्थिति को समाप्त करके विवाह के साधन जुटाता है फिर भी वर पक्ष संतुष्ट नहीं होता । अधिक धन पाने के लिए वे तरह तरह के हथकंडे अपनाते हैं, दबाव डालते हैं और अपमानित करने से भी नहीं चूकते । दहेज का यह रक्त पिपासु दानव हर गृहस्थ को बरबाद करने की ताक में रहता है । लोग झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा की आड़ में भी इसे सहयोग व संरक्षण देते रहते हैं ।

कुछ व्यक्ति तो आदर्शवादिता का ढोंग करते हैं कि वे दहेज में एक पैसा भी नहीं लेंगे पर इस अवसर पर कन्या पक्षा की ओर से दिए जाने वाले उपहारों की लंबी चौड़ी सूची थमा देते हैं । आभूषण, कीमती वस्त्र, फर्नीचर, फ्रिज, टेलीविजन, बर्तन आदि से लेकर साइकिल, स्कूटर और कार तक के उपहार मांगे जाते हैं । उपहारों का यह सिलसिला वर्ष भर प्रत्येक तीज त्यौहार पर भी चलता रहे, ऐसी भी आशा की जाती है । इस प्रकार दहेज का यह दानव परिवार का रक्त चूस कर उसे बरबाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ता ।

मजे की बात तो यह है कि दहेज लेने वाला भी कोई विशेष लाभ में नहीं रहता । उसे भी उसी के अनुरूप मिथ्या प्रदर्शन व धूम धड़ाके में रुपया फूंकना पड़ता है । अपने बड़प्पन की धाक जमाने के लिए ही तो दहेज के लिए पैर पसारे थे, अब समाज में अपनी अमीरी की झूठी शान भी तो दिखानी होती है । अमीरी का यह स्वांग कितना मंहगा होता है, इसे हम आसानी से समझ सकते हैं । 'घर फूंक तमाशा देख' वाली स्थिति हो जाती है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दहेज की इस कुप्रथा का दुष्प्रभाव समाज के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र और वर्ग पर पड़ता है । नारी की स्थिति दयनीय होती है । कन्या को जन्म से ही दुर्भाग्य का सूचक समझा जाता है । ऐसी अनिच्छित संतान माता–पिता के सच्चे स्नेह से भी वंचित रह जाती है और हीन भावना से ग्रसित होने के कारण उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास भी नहीं हो पाता । निराशा और हताशा की मनःस्थिति में रहने से उचित अवसर आने पर उसके अंदर आशा, उत्साह और स्फूर्ति का उल्लास भी जाग्रत नहीं होता । फिर जब विवाह के समय उसके माता पिता पर दहेज की मार पड़ती है तो वर पक्ष की निष्ठुरता से दुखी होकर सास–ससुर और पति के प्रति भी वह सच्चा सम्मान नहीं रख पाती ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार दहेज की यह बुराई दोनों पक्षों को आर्थिक क्षति तो पहुंचाती ही है, उनके बीच आत्मीयता के स्थान पर कटुता और घृणा का बीजारोपण भी कर देती है । दहेज का यह दंश जीवन भर सबको दुखी करता रहता है ।

जागृत एवं संस्कारवान युवक-युवतियों का दायित्व

वैसे तो दहेज के इस दानव का विरोध हर व्यक्ति को हर स्तर पर करना ही चाहिए, पर अविवाहित युवक–युवतियों को तो उसका समूल नाश करने की शपथ ही लेनी चाहिए । युवावस्था में प्रलोभन का अंश कम और आदर्शवादिता का अधिक होता है । वे हर बात में उतना लालच करने के अभ्यस्त नहीं होते जितना कि ढलती आयु वाले । उनके शुद्ध, सरल और निर्मल हृदय पर आदर्शवादी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारधारा का अधिक प्रभाव रहता है ।

युवकों को चाहिए कि वे स्पष्ट रूप से अपने अभिभावकों को यह बता दें कि वे बिकाऊ माल नहीं हैं और किसी भी सूरत में दहेज ग्रहण नहीं करेंगे । नारी जाति के प्रति अपनी श्रद्धा एवं उदारता प्रदर्शित करने के लिए और समाज को इस घातक दलदल से बाहर निकालने के लिए थोड़ा साहस दिखाने को उन्हें कटिबद्ध हो जाना चाहिए । उनके सत्संकल्प की दृढ़ता के आगे उनके माता–पिता भी अंततः झुक जाएंगे और दहेज रहित आदर्श विवाह के लिए अपनी मानसिकता बना लेंगे । इसका प्रत्यक्ष लाभ भी उन युवकों को मिलेगा । जब दहेज का बंधन नहीं रहेगा तो गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर सुंदर व सूशील कन्या के चुनाव में कोई बाधा नहीं आएगी और जीवन पर्यंत दांपत्य जीवन के अलौकिक आनंद का सुख मिलता रहेगा । उनकी साहसिकता की सराहना होगी सो अलग ।

युवतियों को भी पीछे नहीं रहना चाहिए । वर्तमान सामाजिक व पारिवारिक परिस्थितियों में लड़कियों से अधिक आशा तो नहीं की जा सकती परंतु यदि एक लड़की भी दृढ़ संकल्प के साथ दहेज लोभी लड़के वह उसके परिवार को ठुकरा दे तो उसके प्रभाव से सैकड़ों लड़कों की आंखें खुल जाएंगी और वे उसके साहस का सम्मान करने को स्वयं आगे आ जाएंगे । दहेज की आग में जलते हुए नारकीय जीवन जीने को बाध्य होने से तो यह कहीं अच्छा है कि ब्रह्मचर्यपूर्वक पवित्र जीवन रखने की प्रतिज्ञा कर ली जाए तथा उपयुक्त वर मिलने पर ही विवाह बंधन में बंधा जाए । वे अपनी शिक्षा, प्रतिभा व क्षमता के आधार पर स्वयं स्वावलंबी बनकर माता पिता का भार भी हलका कर सकती हैं और समाज में अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहचान भी बना सकती हैं । यदि लड़कियां इस प्रकार का साहस प्रदर्शित कर सकें तो लड़के वाले दहेज का नाम लेना ही भूल जाएं और स्वयं उनके आगे घुटने टेक दें ।

लड़कों को यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि दहेज की आकांक्षा वही करते हैं जिन्हें अपने पुरुषार्थ पर भरोसा नहीं होता । परमपिता परमेश्वर ने उन्हें इतनी प्रतिभा व क्षमता प्रदान की है कि वे अपरिमित धन कमा सकते हैं । अपनी मेहनत और ईमानदारी से कमाए गए धन की पवित्रता उनके जीवन को आनंद व उल्लास से परिपूर्ण कर देगी । अनीति और अन्याय के द्वारा कमाया हुआ धन जुगनू की भांति चमकता है एवं थोड़ी देर की चकाचौंध के बाद पुनः अंधकार का साम्राज्य छा जाता है । इससे व्यक्ति अनेक दुर्व्यसनों में भी फंस जाता है जिनसे छुटकारा पाना भी कठिन होता है ।

यही स्थिति दहेज से प्राप्त धन व उपहारों के कारण भी होती है । अथर्ववेद ने तो स्पष्ट रूप से यह घोषणा की है कि जो पुरुष स्त्री द्वारा लाए द्रव्य का उपभोग करता है वह अपवित्र हो जाता है ।

अश्लीला तनूर्भवति रुशती पापयामुया ।
पतिर्यद् वध्योः वाससः स्वमङ्गमभ्युर्णुते ॥

(अथर्व वेद १४/१/२७)

शास्त्रों में यह विधान है कि ज्ञानवान, हृष्ट-पुष्ट तथा पुरुषार्थी व्यक्ति ही सुंदर, सुशील, गुणवती स्त्री के साथ विवाह करके गृहस्थ आश्रम का दायित्व निभाएं । अग्नि, सूर्य, व राजा के समान परिवार के पालन पोषण की व्यवस्था करें । पति सूर्य के समान सदैव कर्मशील व गतिशील रहे, परिवार की आवश्यकतानुसार यथेष्ट धनोपार्जन करे और राजा के समान पत्नी व परिवार को संतुष्ट, सुखी व सुरक्षित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रखे । कुसंस्कारी व्यक्ति इन दैवी शास्त्रीय मर्यादाओं का पालन नहीं करते और अज्ञान व आलस के कारण सदैव दुखी रहते हैं । वे मुफ्त के माल के ही चक्कर में रहते हैं और अपनी इसी निकृष्टता का प्रमाण देते हुए जबरन दहेज वसूल करने का नीचतापूर्ण दुस्साहस भी करते हैं ।

विवाह के समय वधू के परिवार की ओर से यदि स्वेच्छया कुछ द्रव्य दिया जाता है तो वह उसका स्त्रीधन है । ऐसे धन का उपयोग करने का पति को कोई अधिकार नहीं होता । माता–पिता द्वारा अपनी पुत्री को स्वेच्छया दिए गए उपहार और जबरन वसूले गए दहेज में जमीन आसमान का अंतर होता है । दहेज लेना कानूनी अपराध तो है ही, यह आत्मा को पतित करके पुरुष के मान, सम्मान, यश, गौरव सबको धूल में मिला देता है । पत्नी के धन से अपनी गृहस्थी की गाड़ी खींचने की जो योजना बनाते हैं उनसे अधिक नीच, धूर्त और दुष्ट दूसरा नहीं हो सकता ।

इन सभी बातों पर गंभीरतापूर्वक विचार करके सभी संस्कारवान, जागृत युवक–युवतियों को अपना दायित्व निभाना चाहिए और समाज को इस घृणित कुप्रथा से मुक्त करने में अपना ठोस सहयोग प्रदान करना चाहिए ।

कन्यादान और दहेज का अंतर समझें

कन्यादान का यह अर्थ नहीं है कि जिस प्रकार कोई संपत्ति, जमीन, जायदाद, गाय, बैल आदि बेचे या किसी को दान में दे दिए जाते हैं, उसी प्रकार कन्या को भी दान में दिया जाता हो । हर मनुष्य की एक स्वतंत्र सत्ता है और कोई भी उसका दान नहीं कर सकता चाहे वह उसके माता पिता ही क्यों न हों । विवाह तो एक द्विपक्षीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझौता है जिसमें दोनों पक्षों को पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों को निभाना होता है । इसमें खरीदने, बेचने या दान करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता ।

कन्यादान का वास्तविक तात्पर्य तो यह है कि कन्या के भरण–पोषण, सुरक्षा, सुख–शांति, आनंद, उल्लास आदि को जो दायित्व अब तक उसके माता पिता या अभिभावक उठा रहे थे, उसका स्थानातरण अब वर और उसके परिवार पर हो जाता है । इसमें दान की यदि कोई बात है तो वह इस दायित्व और कर्तव्य के दान की ही है जिसे वर पक्ष को चौगुने मनोयोगपूर्वक निभाने को तत्पर रहना चाहिए ।

उस गुप्तदान को भी कन्यादान कहा जाता है जो विवाह के समय स्नेहवश अभिभावकों द्वारा कन्या को दिया जाता है । इसके बारे में तो किसी को कुछ पूछने या जानने का अधिकार भी नहीं है, न उसके प्रदर्शन की आवश्यकता है । शास्त्रों में इसे गुप्त रखने के लिए ही आटे की लोई में छिपा कर देने की व्यवस्था है पर अब लोगों ने इस पवित्र, स्नेहिल उपहार को भी दहेज का आधार बना लिया है और कन्यादान में मंहगे आभूषणों की मांग की जाती है ।

कन्यादान के वास्तविक अर्थ को समझकर इस प्रकार के भ्रामक एवं दुष्टतापूर्ण अनर्थ का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए तथा इसकी मूलभूत भावना का सम्मान करना चाहिए ।

पतिव्रत और पत्नीव्रत साथ-साथ

पतिव्रत की चर्चा तो बहुत की जाती है, पर पत्नीव्रत की बात कोई नहीं कहता । पत्नी के लिए न जाने कितनी मर्यादाएं हैं । उसे क्या करना चाहिए, कैसे करना चाहिए, किन के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए और किस तरह सोचना चाहिए आदि अनेक नियम,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपनियम, उपदेश उसे जन्म से ही सुनने होते हैं । पर पति की उच्छृंखलता पर अंकुश लगाने में समाज अधिक रुचि नहीं लेता और अधिकांशतः उदासीनता भी प्रदर्शित करता है । यह अनुचित ही नहीं अन्याय भी है । ताली दोनों हाथ से बजती है । आदर्शों का निर्वाह दोनों ओर से होना चाहिए ।

पति और पत्नी दोनों ही गाड़ी के दो पहियों के समान हैं और दोनों का स्तर भी एक समान ही है । दोनों को सच्चे मित्र की भांति एक दूसरे के प्रति निष्ठा व ईमानदारी से प्रेम संबंध रखने चाहिए । जिस पक्ष से भूल होती है उसे तत्काल सुधारना चाहिए । कोई भी दूसरे पर एकाधिकार जमाने का अहंकार प्रदर्शित न करे । सफल दांपत्य जीवन के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक दृष्टि से पति पत्नी एक दूसरे के प्रति पूर्ण विश्वास रखें तथा मर्यादा व संयम के साथ एक दूसरे के प्रति समर्पित हों । जिस प्रकार पत्नी पति का सम्मान करती है उसी प्रकार पति को भी पत्नी का सम्मान करना चाहिए ।

जिस घर में पतिव्रत और पत्नीव्रत का निर्वाह साथ–साथ होता है वहां सदैव हर्ष व उल्लास का वातावरण बना रहता है तथा परिवार में सभी को अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का समुचित अवसर मिलता है । इसी में दांपत्य जीवन की सार्थकता है ।

वैदिक काल में ही ऋषियों ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया था और विवाह संस्कार के समय वर एवं वधू द्वारा कुछ प्रतिज्ञाएं लेने का विधान बनाया था । इन प्रतिज्ञाओं का जीवन भर पालन करना दोनों का परम पुनीत दायित्व है और यही पतिव्रत एवं पत्नीव्रत का मूल आधार है । इसके साथ ही समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को सदैव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

याद रखने के लिए 'सप्तपदी' की व्यवस्था निश्चित की गई थी ।

यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि विवाह संस्कार के समय इन प्रतिज्ञाओं और सप्तपदी पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता और बाद में तो उन्हें बिल्कुल ही भुला दिया जाता है । इनके माध्यम से शास्त्रों ने जो निर्देश दिए हैं वे अत्यंत सारगर्भित हैं । इनका बार बार स्वाध्याय करते रहना चाहिए ।

वर-वधू की प्रतिज्ञाएं

विवाह संस्कार का यह सबसे महत्वपूर्ण भाग है । कन्यादान, पाणिग्रहण एवं ग्रंथि बंधन हो जाने के बाद वर–वधू के दांपत्य जीवन में बंध जाने की सार्वजनिक स्वीकृति हो जाती है । वे पति और पत्नी के महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो जाते हैं । जिस प्रकार किसी भी महत्वपूर्ण पद को ग्रहण करने के साथ शपथ समारोह होता है उसी प्रकार पति और पत्नी के रूप में अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा से निभाने की प्रतिज्ञा सार्वजनिक रूप से कराई जाती है । इस दिशा में पहली जिम्मेदारी पति की ही होती है अतः पहले वर तथा बाद में वधू से प्रतिज्ञाएं कराई जाती हैं ।

यहां प्रतिज्ञा के संस्कृत मंत्र छोड़ दिए गए हैं । 'विवाह पद्धति' पुस्तक में उन्हें देखा जा सकता है ।

वर की प्रतिज्ञाएं

(१) आज से धर्मपत्नी को अर्धांगिनी घोषित करते हुए उसके साथ अपने व्यक्तित्व को मिलाकर एक नए जीवन की सृष्टि करता हूँ । अपने शरीर के अंगों की तरह धर्म पत्नी का ध्यान रखूंगा ।

(२) प्रसन्नतापूर्वक गृहलक्ष्मी का महान अधिकार सौंपता हूँ और जीवन के निर्धारण में उसके परामर्श को महत्व दूंगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(३) रूप, स्वास्थ्य, स्वभावगत गुण–दोष एवं अज्ञानजनित विकारों को चित्त में नहीं रखूंगा । उनके कारण असंतोष व्यक्त नहीं करूंगा । स्नेह पूर्वक सुधारने या सहन करते हुए आत्मीयता बनाए रखूंगा ।

(४) पत्नी का मित्र बनकर रहूंगा और पूरा–पूरा स्नेह देता रहूँगा । इस वचन का पालन पूरी निष्ठा और सत्य के आधार पर करूंगा ।

(५) पत्नी के लिए जिस प्रकार पतिव्रत की मर्यादा कही गई है उसी दृढ़ता से स्वयं पत्नीव्रत धर्म का पालन करूंगा । चिंतन और आचरण दोनों से ही पर नारी से वासनात्मक संबंध नहीं जोड़ूंगा ।

(६) गृह व्यवस्था में धर्मपत्नी को प्रधानता दूंगा । आमदनी और खर्च का क्रम उसकी सहमति से करने की गृहस्थोचित जीवनचर्या अपनाऊंगा ।

(७) धर्मपत्नी की सुख, शांति, प्रगति तथा सुरक्षा की व्यसवस्था करने में अपनी शक्ति तथा साधनों आदि को पूरी ईमानदारी से लगाता रहूंगा ।

(८) अपनी ओर से श्रेष्ठ व्यवहार बनाए रखने का पूरा–पूरा प्रयत्न करूंगा । मतभेदों का सुधार शांति के साथ करूंगा । किसी के सामने पत्नी को लाँछित, तिरस्कृत नहीं करूंगा ।

(९) देवतागण, अग्नि तथा सत्पुरुषों की साक्षी में वचन देता हूं कि पत्नी के प्रति सहिष्णु और मधुर भाषी बनकर रहूंगा ।

(१०) पत्नी के असमर्थ या अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाने पर भी अपने सहयोग और कर्त्तव्य पालन में रत्ती भर भी कमी न रखूंगा, ऐसा विश्वास दिलाता हूं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(११) मधुर प्रेम युक्त चर्चा, सद्व्यवहार तथा दृढ़ पत्नीव्रत के पालन का वचन देता हूं ।

कन्या की प्रतिज्ञाएं

(१) अपने जीवन को पति के साथ संयुक्त करके नए जीवन की सृष्टि करूंगी । इस प्रकार घर में हमेशा सच्चे अर्थों में अर्धांगिनी बनकर रहूंगी ।

(२) पति के परिवार के परिजनों को एक ही शरीर के अंग मानकर चलूंगी । सभी के साथ शिष्टता बरतूंगी, उदारतापूर्वक सेवा करूंगी, मधुर कोमल व्यवहार रखूंगी ।

(३) आलस्य को छोड़कर परिश्रम पूर्वक गृहकार्य करूंगी । इस प्रकार पति की प्रगति और विकास में समुचित योगदान करूंगी ।

(४) पतिव्रत धर्म का पालन करूंगी । पति के प्रति श्रद्धाभाव बनाए रखकर सदैव उनके अनुकूल रहूंगी । कपट दुराव न करूंगी । निर्देशों के अविलंब पालन का अभ्यास करूंगी ।

(५) सेवा परायणता, स्वच्छता, प्रसन्नता तथा प्रिय भाषण का अभ्यास बनाए रखूंगी । इसके विपरीत ईर्ष्या, कुढ़न, रूठने आदि के दोष न अपनाऊंगी । इस प्रकार सदा प्रसन्नता देने वाली बनकर रहूंगी ।

(६) मितव्ययी बनकर घर का संचालन करूंगी । फिजूल खर्ची से बचूंगी । पति के आर्थिक या शारीरिक दृष्टि से असमर्थ हो जाने पर भी उत्साह पूर्वक सद्गृहस्थ के अनुशासन का पालन करूंगी ।

(७) नारी के लिए पति देवस्वरूप होता है । यह मानकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मतभेद भुलाकर सेवा करते हुए जीवन भर सक्रिय रहूंगी । कभी भी पति का अपमान न करूंगी ।

(८) जो पति के पूज्य और श्रद्धा पात्र हैं उन्हें सेवा द्वारा और विनय द्वारा सदैव संतुष्ट रखूंगी ।

(९) किसी भी स्थिति में कभी भी, स्वयं पति के विमुख हो जाने पर भी प्रतिफल की आशा किए बिना अपने कर्तव्यों का पालन करूंगी ।

सप्तपदी

वर वधू की प्रतिज्ञाओं के उपरांत यज्ञ की परिक्रमा और भांवरों का क्रम चलता है और इस प्रकार विवाह संस्कार का व्यक्तिगत एवं पारिवारिक भाग पूर्ण हो जाता है । परंतु गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के साथ ही समाज के प्रति पति पत्नी के रूप में उनके दायित्वों का स्मरण कराने के लिए सप्तपदी का आयोजन उसी समय होता है । वर वधू साथ साथ कदम से कदम मिलाकर सैनिक की भांति सात कदम आगे बढ़ाते हैं । एक कदम आगे बढ़ते हैं, रुकते हैं और फिर अगला कदम बढ़ाते हैं । प्रत्येक बार रुककर मंत्र के साथ अपने कर्तव्यों को दोहराते हैं ।

विवाह के उपरांत ये जो सात कार्य करने हैं, उनमें दोनों का उचित और न्यायसंगत योगदान रहे, इसकी रूपरेखा सप्तपदी में निर्धारित की गई है । दैवी शक्तियों की साक्षी में इनको पूरा करने का संकल्प लिया जाता है ।

पहला कदम अन्न के लिए है । अन्न का उत्पादन, अन्न की रक्षा, अन्न का सदुपयोग जो कर सकता है वही सफल गृहस्थ है । आहार सात्विक एवं स्वास्थ्यवर्धक हो, चटोरेपन का कोई स्थान न हो,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिथि सत्कार में कमी न हो । पहले कृषि ही मुख्य व्यवसाय था और गृहस्थ द्वारा उपजाए गए अन्न से ही ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के लोगों का भी काम चलता था । अब अनेक प्रकार की जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण होने लगा है । गृहस्थ का धर्म है कि समाज के उपयोग की वस्तुओं के उत्पादन में अपनी प्रतिभा व क्षमता लगाएं । समाज को पतन की ओर ले जाने वाली हानिकारक वस्तुओं का उत्पादन अपने स्वार्थपूर्ति के लिए कभी न करें ।

दूसरा कदम शारीरिक और मानसिक बल के लिए है । व्यायाम, परिश्रम, उचित एवं नियमित आहार विहार से यह संभव है और इसी से परिवार, समाज व राष्ट्र की उन्नति एवं सुरक्षा सुनिश्चित हो सकती है ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तीसरा कदम धन के लिए है । धन के बिना संसार का कोई कार्य नहीं चल सकता । परिश्रम और ईमानदारी से पवित्र साधनों के द्वारा अधिक से अधिक धन कमाएं । अपनी ब्राह्मणोचित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए न्यूनतम धन का उपभोग करें, सादगी व मितव्ययता से काम चलाएं, फिजूलखर्ची, फैशन, व्यसन आदि के चक्कर में न पड़ें । शेष धन को समाज की उन्नति के लिए प्रयोग में लाएं ।

चौथा कदम सुख के लिए है । सदैव प्रसन्नचित्त रहें और प्रत्येक परिस्थिति को ईश्वर का वरदान समझते हुए हंसकर स्वीकार करें । इस प्रकार 'संतोषी सदा सुखी' की नीति अपनाते हुए समाज में सर्वत्र हंसी खुशी का उल्लासमय वातावरण बनाएं ।

पांचवां कदम परिवार पालन के लिए है । परिवार में छोटे बड़े सभी सदस्यों की सुख सुविधा का ध्यान तो रखें ही, उन्हें सुसंस्कारित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाने का भी प्रयास करें । बच्चों को सद्गुणों और सत्प्रवृत्तियों की ओर प्रेरित करें जिससे वे समाज के आदर्श एवं उपयोगी नागरिक बन सकें ।

छठा कदम ऋतुचर्या का है । विवाह को केवल प्रजनन का प्रमाणपत्र समझकर अंधाधुंध संतानोत्पादन के कार्य में ही न जुट जाएं । इससे जनसंख्या की वृद्धि होती है और अपने परिवार के साथ साथ पूरे समाज व राष्ट्र की व्यवस्था गड़बड़ा जाती है । सुखी दांपत्य के लिए मर्यादा व संयम का पूरी कठोरता से पालन करें । आर्थिक, शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्थिति को देखते हुए ही संतान उत्पन्न करें और उसे सुयोग्य सुसंस्कृत बनाने की व्यवस्था करें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सातवां कदम मित्रता को स्थिर रखने और बढ़ाने का है । आपस में और परिवार में तो सभी से मित्र भाव रखें ही, समाज में भी सबसे मित्रवत व्यवहार करें । यह सबसे महत्वपूर्ण है । इस प्रकार उदारता, सहिष्णुता, दया, सेवा आदि की भावना बलवती होती है तथा लोभ, मोह, अहंकार आदि दुर्गुणों का स्वतः ही नाश हो जाता है । मित्र भाव रखने से शत्रु भी दुष्टता का त्याग करके मित्र बन जाते हैं । इस प्रकार एक स्वस्थ समाज का निर्माण होता है ।

इस प्रकार दोनों ही प्रतिज्ञाओं और सप्तपदी के माध्यम से एक सुसंस्कृत परिवार और उत्कृष्ट एवं समर्थ समाज की रचना करने का संकल्प लेकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं । इन संकल्पों को जीवन भर याद रखने और सदैव पालन करते रहने में ही विवाहित जीवन के अलौकिक आनंद की प्राप्ति संभव है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज का उत्तरदायित्व

गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके उसके दायित्वों को भलीभांति निभाते रहने के उद्देश्य से तो युवा वर्ग के लिए अनेक बंधन व प्रतिज्ञाएं लादी गई हैं । पर इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वे अकेले ही इस महासमर में कूद पड़ें । परिवार के अन्य सदस्यों, इष्ट मित्रों तथा समाज को भी यह चाहिए कि दंपत्ति को उचित मार्गदर्शन देते हुए उन्हें अपना कर्तव्यपालन करने में पूर्ण सहयोग दें । यदि अति उत्साह में वे कुछ अनुचित करने लगें तो उन्हें समझाकर अंकुश लगाएं और जब कर्तव्यों के प्रति उदासीनता आने लगे तो उन्हें प्रेमपूर्वक सजग व सचेत करते रहें ।

समाज में व्याप्त दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, दुष्प्रवृत्तियों, कुसंस्कारों और कुरीतियों को दूर करने में समाज के प्रत्येक जागरूक नागरिक को अपनी पूरी शक्ति से प्रयास करना चाहिए । विवाह से जुड़ी कुप्रथाओं को तो समूल नष्ट कर देने का संकल्प लेना चाहिए ।

युग निर्माण परिवार के प्रत्येक भावनाशील परिजन और कर्मठ कार्यकर्ता को भी इस संबंध में संकल्प लेकर तत्काल ही निम्न कार्यक्रम प्रारंभ कर देने चाहिए ।

१–दहेज प्रथा का खुलकर विरोध करें ।

२–दहेज मांगने वालों को सार्वजनिक रूप से बहिष्कृत एवं तिरस्कृत करें ।

३–आडंबर युक्त विवाहों में, जहां धन का फूहड़ प्रदर्शन और अपव्यय होता है, भाग लेने से मना कर दें और खुलकर उनका विरोध करें, चाहे वे निकट संबंधी ही क्यों न हों ।

४–सुसंस्कारित एवं पवित्र वातावरण में सादगी से मनाए जाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने विवाह संस्कारों को प्रोत्साहन दें तथा संबंधित पक्षों की सर्वत्र
ंसा करके दूसरों को भी उनका आदर्श अपनाने की प्रेरणा दें ।

५–विवाह के अवसर पर सभी उपस्थिति जनों को यह पुस्तक
ाहार स्वरूप वितरित कराने की व्यवस्था करें जिससे सभी उस
ाह की स्मृति के साथ ही आगे प्रेरणा लेते रहें ।

६–प्रत्येक परिवार में यह पुस्तक पहुंचाने की व्यवस्था करें
ससे दंपति इसका स्वाध्याय करके अपने जीवन में आई हुई
टियों को दूर कर सकें और विवाहित जीवन का अलौकिक आनंद
सकें ।

७–युवा वर्ग को यह पुस्तक पढ़ने के लिए अवश्य दें जिससे वे
ाह से पूर्व इन आदर्शों को अपनाने की मानसिकता बना सकें ।

प्रत्येक परिजन को इस **सामाजिक सप्तपदी** का पालन करने
दृढ़ संकल्प अवश्य ही लेना चाहिए ।

● नारी के बिना पुरुष की बाल्यावस्था असहाय, युवावस्था आनंदरहित और वृद्धावस्था सांत्वना शून्य होती है ।

● प्यार और सहकार से भरा पूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग है ।

● गृहस्थ एक ऐसा तपोवन है जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है ।

● भीख मांगना छोड़ो भाई । खाओ श्रम की शुद्ध कमाई ॥

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org